बुद्धवर्ष २५४६, कार्तिक पूर्णिमा, १९ नवंबर, २००२ वर्ष ३२ अंक ५

धम्मवाणी

इध मोदति पेच्च मोदति, कतपुञ्ञो उभयत्थ मोदति।
सो मोदति सो पमोदति, दिस्वा कम्मविसुद्धिमत्तनो॥

– धम्मपद १६

यहां (इस लोक में) प्रसन्न होता है, मरणोपरांत (परलोक में) प्रसन्न होता है, पुण्य किया हुआ व्यक्ति दोनों जगह प्रसन्न होता है। वह अपने कर्मों की शुद्धता (पुण्यकर्मसंपत्ति) देखकर मुदित होता है, प्रमुदित होता है।

विपश्यना साधना अब – आंतरिक प्रज्ञा द्वारा आंतरिक शांति

गुरुजी की पश्चिम देशों की यात्रा – अप्रैल से अगस्त २००२

दिवस ५०, मई २९ (न्यूयार्क से सानडियेगो, कैलिफोर्निया)

एक समुद्रतट से दूसरे समुद्रतट तक –

गुरुजी दूसरे दिन प्रातःकाल हवाई जहाज द्वारा न्यूयार्क से सानडियेगो (कैलीफोर्निया)गये। जब गुरुजी और माताजी न्यूयार्क में थे, तब 'धम्म कारवां' के मोटर होम्स चालक अनवरत अनथक गाड़ियां चलाते हुए बोल्डर, कोलोरेडोसे सानडियागो ले गये। वे ठीक समय पर पहुँचे जबकि गुरुजी वहां मोटर होम्स पार्क में आने वाले थे।

उस शाम वे उन आचार्यों से मिले जो पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना में विपश्यना के प्रचार-प्रसार के लिए उत्तरदायी थे।

दिवस ५१, मई ३० (सानडियेगो) प्रयोगशाला का निरीक्षण –

पूज्य गुरुजी अक्सर ही कहा करते हैं कि किसी साधक की प्रयोगशाला उसकी यह साढ़े तीन हाथ की काया और मन ही है। शरीर के भीतर ही उसे यह समझने के लिए काम करना पड़ता है कि नाम और रूप में किस प्रकार पारस्परिक प्रक्रिया होती रहती है अर्थात कैसे वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। कैसे नाम (मन) रूप (शरीर) को प्रभावित करता है और कैसे रूप मन को प्रभावित करता है।

जब गुरुजी सानडियेगो में थे तब वे एक परंपरागत पैथोलोजी प्रयोगशाला में खून की जांच करवाने के लिए गये ताकि वे यह जान सकें कि उनके खून में चीनी का प्रतिशत क्या है? उन्हें यह भी चेक करना था कि उनका व्यक्तिगत ग्लूकोमीटर जो बताता है वह कितना सही है?

बाद में उसी प्रातःकाल उन्होंने 'नेशनल पब्लिक रेडियो शो' के प्रोड्यूसर (प्रस्तुतकर्ता) से बातचीत की और उस साक्षात्कार के बारे में विचार-विमर्श किया, जिसे वह एक दो दिनों में प्रसारित करने की योजना बनाये हुये था।

सायं उन्होंने 'सानडियेगो स्टेट यूनिवर्सिटी' के **मोन्टेजुमा हॉल** में सार्वजनिक प्रवचन दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जितने भी प्रवासी यहां आये हैं उनकी इस देश के प्रति पूरी निष्ठा होनी चाहिए। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका कोई काम किसी भी रूप में यहां के लोगों को नुकसान न पहुँचाए।

'बुद्धिज्म' भारत से क्यों खदेड़ दिया गया? इस प्रश्न के उत्तर में गुरुजी ने कहा, क्योंकि यह 'बुद्धिज्म' हो गया था। कुछ ही लोग ऐसे होंगे जो 'बुद्धिज्म' शब्द से ऊपर उठ कर बुद्ध की शुद्ध शिक्षा को समझते हैं। यह ऐसी शिक्षा है जिसमें सांप्रदायिकता की बू नहीं है। लेकिन अधिकांश लोगों के लिए 'बुद्धिज्म' एक धार्मिक संप्रदाय है। गुरुजी ने बताया कि भारत बुद्ध को इसलिए भूल गया क्योंकि उनकी व्यावहारिक शिक्षा 'विपश्यना' शुद्ध रूप में नहीं रह सकी, वह विकृत हो गयी और अंततः लुप्त हो गयी।

दिवस ५२, मई ३१ (ऑरेंज काउन्टी, कैलिफोर्निया)

धर्मपथ की यात्रा –

धम्म कारवां प्रातः सानडियेगो से चल कर इरविन आया जहां गुरुजी ने एक दिवसीय शिविर में विपश्यना दी। शिविर का आयोजन एक मोरमोन चर्च में हुआ था। उन्होंने विपश्यना देने के पश्चात साधकों के प्रश्नों के उत्तर दिये।

एक साधक ने पूछा कि क्या विपश्यना में प्रार्थना की कोई भूमिका है? गुरुजी ने कहा यदि आप किसी अदृश्य शक्ति से कोई चीज पाने लिए प्रार्थना करते हैं, तब आप अधिक से अधिक दूसरों पर निर्भर हो रहे हैं। इसके विपरीत, यदि आप धर्म के पथ पर उचित ढंग से चल रहे हैं, ठीक से धर्म का अभ्यास कर रहे हैं, तब जो भी अदृश्य प्राणी हैं वे अवश्य खुश होंगे। इसलिए महत्त्वपूर्ण बात है धर्मपथ पर चलना। एक दूसरे साधक ने अपनी साधना में कितनी प्रगति हुयी तथा उसमें विविध प्रकार की प्राप्तियों के बारे में जानना चाहा। गुरुजी ने उत्तर दिया कि धर्मपथ पर कितनी प्रगति हुयी इसका प्रमुख मापदंड यह है कि आपके जीवन में अच्छे के लिए सुधार हो रहा है या नहीं और आप पहले से अधिक शांतिमय और सुखी जीवन बिता रहे हैं या नहीं।

कुंडलिनी के संबंध में एक प्रश्न के उत्तर में गुरुजी ने बताया कि भारत में बुद्ध की शिक्षा खो जाने के बाद विपश्यना के कुछ अनुभवों के बारे में लोग चर्चा करते रहे। संवेदनाओं के बारे में भी चर्चा होती थी। इसलिए संवेदना प्राप्त करने के लिए नये अभ्यास शुरू किये गये। इन प्रयासों से वे शरीर के कुछ स्थानों पर ही संवेदना

अनुभव करसकतेथे, जिन्हें चक्र कहाजाता है और जो सुषुम्ना नाड़ी पर स्थित होते हैं। यहां आसानी से संवेदनाएं अनुभव कीजा सकती हैं। लेकिनइन संवेदनाओं कीअनित्यता कीअनुभूति उन्हें नहीं होती थी और न ही इसके प्रति तटस्थ रहने के लिए कोईप्रयास होता था। इसलिए यह अभ्यास संस्कारोंको जड़ से नहीं उखाड़ सका, बल्कि इससे तो तृष्णा बढ़ने कीस्थिति ही अधिक मजबूत हुई।

एक साधक इस बात से आशंकित था कि सब समय बीमारों कीसेवा करतेरहने से उसके मन पर कहींबुरा असर तो नहीं होगा? गुरुजी ने उसे यह कहकरआश्वस्त कियाकि बीमारों कीसेवा करना धर्म काही एक अंग है और इससे धर्म काअभ्यास दृढ़ होता है। जब तक मैत्री और करुणामन में है, आप बीमारों कीसेवा करकेबहुत शक्ति प्राप्त करेंगे।

जब एक साधक ने आकरकहा- आप कोशिक्षा देने के लिए धन्यवाद! तब गुरुजी ने तपाक से उत्तर दिया- मेरी शिक्षा नहीं, यह बुद्ध कीशिक्षा है। उसी स्थान पर उन्होंने शाम में **सार्वजनिक प्रवचन** दिया। इस प्रवचन का साथ-साथ चीनी भाषा में अनुवाद हुआ।

गुरुजी ने बोधिसत्व कीकहानी कही जो अंत में बुद्ध बने। जीवन में निहित दुःख से छुटकारा पाने के लिए अभिनिष्क्रमण के बाद सिद्धार्थ ने विविध प्रकार की समाधियां सीखी थीं। इन समाधियों ने जो एक या दूसरी वस्तु काआलम्बन बनाकरप्राप्त की जाती थीं, उन्हें मन कीकुछशांति और शुद्धता दी। योगी राजकुमार ने पाया कि ऊंची समाधि के बावजूद अपने अंतस्तल में जो विकृतियांऔर मैल था उनकोवे नहीं हटा सके।तब उन्होंने विविध प्रकार की कठिन तपस्याएं की –जैसे भूखा रहना आदि, जिससे उनका शरीर मात्र हड्डी काढांचा रह गया। इस तरह की तपस्या उन्होंने इस विश्वास के साथ कीकि शरीर कोकष्ट देने से मन स्वच्छ होता है। उन्होंने पाया कि इस तरह अपने कोकष्टदेने से मन के मैल कोदूर करनेमें उन्हें कोईसहायता नहीं मिली। इसलिए छह वर्षों की इन कठोर तपस्याओं को छोड़ दिया और मध्यम मार्ग अपनाते हुए जिस विद्या का स्वयं अविष्कार किया वह थी 'विपश्यना', जिससे उन्हें बोधि प्राप्त हुई।

हम लोग सौभाग्यशाली हैं कि वही 'विपश्यना' हमें अपने शुद्ध रूप में प्राप्त हुयी है क्योंकि म्यंमा में यह गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा बिल्कुलशुद्ध रूप में रखी गयी। इसकाऐतिहासिक प्रमाण है और यह परिणामकारक भी रही है। अतः हम इसकाअभ्यास करके अपनी विकृतियों के बंधन से मुक्त होवें।

सार्वजनिक प्रवचन के बाद कारवांअंजुसा के बर्मीज विहार के लिए रवाना हुआ और मध्यरात्रि के करीब वहां पहुँचा।

दिवस ५३, जून १ (अंजुसा, केलिफोर्निया)म्यंमा बुद्ध विहार –

इस बर्मीज विहार में आकरधम्म कारवांके सभी स्वयंसेवकों कोबड़ा चैन मिला। वहां के आदरणीय भिक्षु बड़े मेहमाननवाज थे। उन लोगों ने बड़ा सत्कारकिया।बर्मीज गृहस्थ भी, जो महाविहार को चलाने में सहयोग करते हैं, बड़े ही श्रद्धालु और सज्जन थे।

सुबह टहलते समय गुरुजी ने संघ का सम्मान किया।

शाम कोउन्होंने वाड्सवर्थ थियेटर, ब्रेंटवुड, लॉस एंजीलस में सार्वजनिक प्रवचन दिया। उन्होंने बताया कि विपश्यना शांतिमय और सुखमय जीवन जीने कीएक कला है। इसकाअभ्यास अपने तथा दूसरों के लिए भी अच्छा है। प्रवचन इतना रोचक था कि प्रारंभ से ही श्रोतागण हँसते रहे। बाद में गुरुजी ने जब यह बताया कि विपश्यना कैसे एक शुद्ध विज्ञान है जो नाम और रूप कापारस्परिक संबंध बताता है, तब भी श्रोतागण बड़ी ही गंभीरता और पूरी तन्मयता से उनकोसुनते रहे। जैसे कि सभी प्रवचनों में होता है, प्रश्नोत्तर सत्र में धर्म कीबातें सभी कोस्पष्टतः समझ में आ जाती हैं।

श्रोताओं ने जानना चाहा कि वैवाहिक जीवन में सेक्स (यौन-संबंधों) काक्या स्थान है? गुरुजी ने उत्तर दिया कि एक साथी के साथ शारीरिक संबंध रखने से शील भंग नहीं होता और यह नुकसानदेहभी नहीं है। यदि कोईअधिक से अधिक इंद्रियसुख और महज कामवासना कीतृप्ति के लिए बार-बार साथी बदलता रहता है, तो वह कामवासनाकीआग में जलने लगता है और सब समय दुःखी और अशांत रहता है।

किसीने पूछा –'अगर मैं प्रतिक्रिया न करूंतो जीवन में मुझे क्या मजा मिलेगा? श्रोताओं कीहँसी के बीच गुरुजी ने उत्तर दिया कि जीवन में मौज-मस्ती मारना ठीक है, लेकिनयह सुनिश्चित करें कि आप जीवन में आनंद ले रहे हैं। इसके लिए आवश्यक है कि आपको आनंद में कोईआसक्ति न हो और उसके न होने पर आप दुःखी न हों।

दिवस ५४, जून २ (अंजुसा, केलिफोर्निया)संघदान –

गुरुजी और माताजी की ओर से ऊ टिन टुन द्वारा एक संघदान आयोजित कियागया। दक्षिण एशियाई देशों के प्रवासी समुदाय इस शुभ काम को आयोजित करने के लिए एकत्र हुए। भिन्न-भिन्न परंपराओं के आदरणीय भिक्षुओं और भिक्षुणियों कोएक जगह लाना बड़ा भारी कामथा। परंतु ऊ टिन टुन ने हेनरी कोव तथा बहुत से अन्य निःस्वार्थी स्वयंसेवकों कीसहायता से इस शुभ कामके लिए बड़ा कठिनपरिश्रम किया।संघदान के समय वहां एक हजार से अधिक लोग उपस्थित थे। गुरुजी और माताजी ने संघ को भोजन दान तथा अन्य प्रत्यय दिये।

'सदर्न केलिफोर्नियाबुद्धिस्ट काउंसिल' के अध्यक्ष भंते पियनंद ने आरंभिक भाषण दिया जिसमें उन्होंने बताया कि उन्होंने पहला दस-दिवसीय शिविर १९७३ ई. में गुरुजी के सान्निध्य में कियाथा। बाद में पूज्य गुरुजी ने अपने धर्म-प्रवचन में विभिन्न परंपराओं से आये भिक्षुगण से बनी इस इंद्रधनुषी छटा कोदेखने तथा सम्मान प्रदर्शित करने के लिए अवसर पाने पर अपनी खुशी जाहिर की। उन्होंने बताया कि ये सब एक ही वृक्ष कीशाखाएं हैं और सभी बुद्ध धम्म से ही सुपोषित हैं। बुद्ध धम्म कासार **पटिच्च-समुप्पाद** है। सभी मानते हैं कि 'चार आर्य सत्य' तथा 'अष्टांगिक मार्ग' ही बुद्ध कीमूल शिक्षा है। इनकोसिर्फ बौद्ध लोग ही स्वीकारनहीं करतेबल्कि सभी धर्मों के लोग स्वीकारते हैं।

सभी धर्मों में शील, समाधि तथा मन कीशुद्धता सर्वमान्य बातें हैं। शील के लिए कुशलचित्त कीएकाग्रताआवश्यक है, जिसकाअर्थ यह है कि चित्त (मन) राग और द्वेष से मुक्त हो। बुद्ध ने एक सहज विधि बतायी जिससे वह अपने मन कोनासिकाग्रपर या ऊपरी ओठ और नासिकारंध्रोंके नीचे तिकोने प्रदेश पर रखकर आनापान पर केंद्रितकरताहै। जब कोईअभ्यास करताहै तो मन सूक्ष्म हो जाता है और इस प्रदेश (क्षेत्र) में होने वाली संवेदनाओं कोअनुभव करने लगता है। जब साधक अपने अंदर के सत्यों कोदेखना शुरू करताहै, तब वह उन सत्यों काअनुभव स्वयं करताहै जिन्हें बुद्ध ने कियाथा।

कारण-कार्य का सिद्धांत बुद्ध का एक अप्रतिम (अपूर्व) आविष्कार था। **इमस्मिं सति इदं होति, इमस्मिं असति इदं न**

होति। अगर यह कारण है तो यह कार्य होगा, अगर यह कारण नहीं है तो यह कार्य नहीं होगा।

प्रतीत्य-समुत्पाद में बुद्ध ने बताया कि **सळायतन-पच्चया फस्सो, फस्सपच्चया-वेदना, वेदना-पच्चया तण्हा** – छः द्वारों के कारण स्पर्श होता है, स्पर्श के होने पर वेदनाएं और वेदनाओं पर निर्भर हो राग और द्वेष उत्पन्न होते हैं।

गुरुजी ने कहा कि कैसे भारत में लोगों की रुचि बुद्ध की शिक्षा के प्रति जागी है।

शाम में उन्होंने मि. हूवर और उनकी पत्नी से भेंट की। ये दंपत्ति म्यंमा बुद्ध विहार, अंजुसा में गुरुजी से मिलने आये थे। मि. हूवर सयाजी ऊ बा खिन के सबसे पहले पश्चिमी साधकों में एक थे। गुरुजी पुराने मित्र और गुरुभाई से मिल कर बड़े प्रसन्न हुए। वे लोग देर तक बातें करते रहे।

दिवस ५५, जून ३, (अंजुसा से 'धम्म महावन', नॉर्थ फोर्क)

क्षांति (सहिष्णुता) –

यह बड़ी व्यस्त सुबह थी। गुरुजी को दूसरे विहार में रह रहे भंते डी. धम्मेथी से मिलने के लिए विहार से प्रातःकाल ही निकलना था। जब गुरुजी बीस साल बाद १९९० में म्यंमा लौटे थे तब उनके द्वारा संचालित विपश्यना शिविरों की उन्होंने ही मेजबानी की थी। दोनों के बीच जो मीटिंग हो रही थी, उसमें एक फोन इंटरव्यू के कारण व्यवधान हुआ। फोन पर दिया गया यह रेडियो साक्षात्कार फिलाडेल्फिया के 'नेशनल पब्लिक रेडियो' पर प्रसारित किया गया।

वे विहार लौट आये, जहां मोटर होम्स खड़े थे। आते ही उनका एल. ए. टाइम्स (लॉस एंजिलस टाइम्स) की संवाददाता मिस हिलेरी मेकग्रिगर और छायाकार बॉब ने स्वागत किया।

जब गुरुजी लॉस एंजिलस के 'म्यूजियम ऑफ टालरेंस' जा रहे थे तब चलते हुए मोटर होम में ही मिस मैकग्रिगर ने गुरुजी का एक घंटे तक साक्षात्कार लिया जो दो दिन बाद ५ जून को 'ड्राइवेन टु एनलाइटेन' हेडिंग से "एल. ए. टाईम्स" में छपा।

गुरुजी ने 'म्यूजियम ऑफ टॉलरेंस' को इसलिए देखा कि यह एक ऐसा विषय है जिसके बारे में जानने के लिए वे बहुत दिनों से अथक प्रयास कर रहे थे कि यह ऑडियो-विजुअल लोगों पर कितना प्रभाव छोड़ती है? यह म्यूजियम आधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति कहां तक कर पा रहा है? क्योंकि "ग्लोबल पगोडा" की दर्शक-दीर्घा प्रदर्शनी में ऐसे ही शक्तिशाली संसाधन की योजना है ताकि वर्ष भर प्रतिदिन वहां आने वाले लाखों दर्शकों को बुद्ध तथा उनकी शिक्षा के बारे में सच्चाई से अवगत कराया जा सके। यद्यपि गुरुजी तथा उनके साथ आए साधक यहूदियों पर हुए नरसंहार से अवगत थे, फिर भी उस म्यूजियम को देखने के बाद मानवकृत त्रासदी के वीभत्स रूप से सभी बहुत द्रवित हुए।

पूर्ण मुक्ति के अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्षांति (सहिष्णुता) एक आवश्यक पारमिता है, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों, मानवजातीय पृष्ठभूमियों के प्रति सहिष्णुता, दूसरे के वैसे कामों के प्रति सहिष्णुता जो कि व्याकुल करने वाले होते हैं और इनसे भी महत्त्वपूर्ण हैं वैसी दृष्टियों के प्रति सहिष्णुता जो अपने से भिन्न हैं – मानव समाज में शांति बनाये रखने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस तरह की सहिष्णुता स्वाभाविक रूप से तभी उत्पन्न होती है जब कि मन में मैत्री और करुणा हो।

'म्यूजियम ऑफ टॉलरेंस' से धम्म कारवां नॉर्थ फोर्क के पास **'धम्म महावन'** विपश्यना केंद्र के लिए रवाना हुआ और मध्यरात्रि के ठीक पहले गंतव्य पर पहुँचा।

दिवस ५६, जून ४, 'धम्म महावन'

धम्म कारवां की मेजबानी करनेवाला 'धम्म महावन' दूसरा केंद्र था। गुरुजी का मोटर होम शांति पठार पर लगा दिया गया। उसी दिन सायं एक सार्वजनिक प्रवचन देने के लिए वे फ्रेस्नो गये।

विभिन्न रूपों में हम जिस दुःख का सामना करते हैं जैसे बीमारी का दुःख, जन्म और मरण का दुःख, युद्ध या अन्य किसी प्राकृतिक विपदा के कारण भय से विछोह होने का दुःख, जीवित रहने वालों का मानसिक आघात, जो उस घाव की तरह है जो भरना ही नहीं चाहता, अपनी तथा अपने प्रियजनों की सुरक्षा को खतरे की चिंता से उत्पन्न दुःख आदि विभिन्न दुःखों के बारे में गुरुजी ने बताया। संसार के भिन्न-भिन्न स्थानों पर जो निरर्थक मार-काट हो रही है, उसके बारे में बताया। निर्दोष नागरिक स्त्री-बच्चों सहित केवल इसलिए मारे जा रहे हैं कि वे किसी एक धार्मिक संप्रदाय से जुड़े हैं या भिन्न मानव-जाति समूह के हैं।

इन सब दुःखों से बाहर निकलने का कोई उपाय है? निश्चित रूप से है। विपश्यना लोगों को अपने भीतर शांति पाने में सहायता करती है – सारी दुनिया को शांति पाने में सहायता कर सकती है जो एक ओर तो युद्ध और आतंकवाद से प्रताड़ित उत्पीड़ित हैं और दूसरी ओर ऐंद्रिय सुख से अपने को धोखे में रखती है, अपने आपको ठगती है।

दिवस ५७, जून ५, (धम्म महावन)

चूजों की देखभाल करती हुयी एक मुर्गी की तरह –

गुरुजी अपनी विस्तृत यात्रा में जब कभी भी किसी केंद्र पर समय बिताते हैं तो वे न्यासियों से मिलते हैं, विभिन्न योजनाओं के बारे में पूछताछ करते हैं तथा धम्मसेवकों को ध्यान का अभ्यास करने के लिए मार्गदर्शन देते हैं। एक आचार्य को अपने शिष्यों की देखभाल वैसे ही करनी चाहिए जैसे मुर्गी चूजों की देखभाल करती है।

'धम्म महावन' में चल रही विभिन्न योजनाओं को चेक करने तथा समुचित सलाह देने के लिए आज गुरुजी को अवसर था। न्यास ने अपने प्रतिवेदन में कहा कि धम्म के प्रसार में महावन कौन-कौन-सा तेज कदम ले रहा है। गुरुजी ने न्यासियों से समूह में और धम्मसेवकों से अलग-अलग मिले। उनसे मिलने वालों में वे साधक भी थे जो बहुत वर्षों से भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा दे रहे थे अथवा जिन्हें कोई असाध्य रोग था। कुछ साधक ऐसे भी थे जो पारिवारिक या आर्थिक कठिनाईयों से परेशान थे और बहुत से ऐसे थे जो स्वस्थ थे और व्यापार-धंधे में लगे हुए थे। लेकिन चाहे गंभीर समस्याओं का सामना करने वाले साधक हों या वे जो उन्हें मात्र श्रद्धा अर्पित करने के लिए आये थे, सभी ने बताया कि कैसे विपश्यना ने उन्हें सुख-दुःख में बहादुर और शांत बनाया है। वे सभी धर्म के प्रति कृतज्ञ और प्रसन्न थे।

पूज्य गुरुजी और माताजी वहां चल रहे तीन-दिवसीय शिविर के साधकों के प्रश्नों के उत्तर देने रमणीय साधना कक्ष में गये। एक साधिका ने पूछा कि वह दृढ़ संकल्प में और आसक्ति में कैसे अंतर कर सकती है? गुरुजी ने कहा कि दृढ़ संकल्प के साथ जब वह कोई ऐसा काम कर रही है जो उसके लिए और समाज के लिए अच्छा है। सफल हो गया तो अच्छी बात है लेकिन दृढ़ संकल्प में असफल होने पर घबड़ा जाती हो तब तुम्हें उसके प्रति आसक्ति है।

कमल के फूल की तरह रहो -

एक साधिका ने पूछा कि वह पश्चिम के प्रदूषित वातावरण में जहां अत्यंत विकर्षण है, बिना प्रभावित हुए कैसे रह सकती है? गुरुजी ने कहा 'कमल के उस फूल की तरह, जो गंदे पानी में उत्पन्न होता है, पर अपने में सटने नहीं देता और पूर्ण सौंदर्य व सुगंध के साथ खिलता है।' (क्रमशः)

सक्रिय साधिका रत्नप्रभा लोखंडे

श्रीमती रत्नप्रभा लोखंडे अनेक शिविरों में भाग लेने के बाद अनन्यभाव से विपश्यना के प्रचार-प्रसार में लग गयी थीं। पूज्य गुरुजी ने उन्हें तथा उनके पति श्री ओंकारलाल लोखंडे को वरिष्ठ सहायक आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर के कई प्रकार की जिम्मेदारियां भी सौंपी थी। श्रीमती लोखंडे पिछले दो वर्ष से स्तन-कैंसर से पीड़ित थीं फिर भी उन्होंने अपनी सेवा में कोई कमी नहीं आने दी। अपने उच्च मनोबल एवं धर्मबल के आधार पर आवश्यक इलाज भी कराती रहीं और इसकी हर यातना को अंतिम क्षण समतापूर्वक सहन करती रहीं। अंतिम घंटे में इतनी सजग थीं कि पूज्य गुरुजी की तिकपट्ठान टेप सुनने की इच्छा व्यक्त की। टेप समाप्त होने पर पानी पिया और समीप बैठी महिला को मैत्री देती हुई ७ सितंबर, २००२ को चिरनिद्रा में सो गयीं।

(संदेश प्रेषक - श्री ओंकारलाल लोखंडे, भोपाल)

धम्मचक्क, सारनाथ 'विपश्यना केंद्र' का निर्माण

जिस पावन भूमि पर भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात पहली बार धर्मदेशना देकर "धम्मचक्कपवत्तन" किया था, वहां विपश्यना केंद्र का निर्माणकार्य आरंभ हो चुका है। इससे पूर्व किन्हीं कारणोंवश यह कार्य संपन्न नहीं हो पा रहा था। अब जिस नई जमीन पर यह निर्माणकार्य आरंभ हुआ है उसकी लैंडस्केपिंग से लेकर केंद्र की सभी प्रकार की जरूरतों की आपूर्ति करनी होगी। फिलहाल वर्तमान योजना पर लगभग ७४ लाख रुपए आने का अनुमान है। जो भी साधक-साधिकाएं इस महान पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे निम्न पते पर संपर्क करें - १). डॉ. पी. एन. सोमानी, ७४ जवाहर नगर कॉलोनी, वाराणसी-२२१०१०. फोन: ०५४२-३१०७७५. २) राय दिनेशचंद्र, कुशस्थली, ५-२/६३८ - क्लब रोड, जे. पी. मेहता कालेज के निकट, वाराणसी - २. फोन: ३८२३४१, ३८२३४४. e-mail: anuragch@satyam.net.in; ३) श्री सत्य प्रकाश, फोन: ०५४२-२०५४१८. फैक्स: २०२२८५ e-mail: Kgem@satyam.net.in

दोहे धर्म के

देश देश में धरम का, गूंजे मंगल घोष।
सबके दुखड़े दूर हों, जागे सुख संतोष॥

लोक लोक में धरम का, फैल जाय आलोक।
लोक लोक मंगल जगे, होवें लोक अशोक॥

दान शील श्रद्धा बढ़े, प्रज्ञा बढ़े प्रभूत।
मैत्री जागे द्वेष से, अंतस रहे अछूत॥

जैसे मेरे दिन फिरे, सब के दिन फिर जांय।
जैसे मेरे दुख कटे, सब के दुख कट जांय॥

शुद्ध धर्म मुझको मिला, ऐसा सब पा जांय।
मेरे मन का शान्ति सुख, जन जन मन छा जाय॥

धन्य हुआ जीवन मिली, शुद्ध धर्म की धार।
अब अपने पुरुषार्थ से, होय दुखों के पार॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
११-१३, सनस प्लाजा, १३०२ बाजीराव रोड,
पूणे-४११००२, फोन: ४४८-६१९०
महालक्ष्मी मंदिर लेन, २२ भूलाभाई देसाई रोड,
मुम्बई-४०००२६, फोन: ४९२-३५२६
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

द्वेस द्रोह सारा मिटै, बैर भाव ह्वै दूर।
भाई भाई मँह जगै, फेर प्यार भरपूर॥

द्वेस द्रोह सैं का मिटै, प्यार परस्पर होय।
सुद्ध धरम फिर स्यूं जगै, जन जन मंगळ होय॥

सुद्ध धरम ऐसो जगै, अंतर निरमळ होय।
जनमां रा बंधन कटै, मुक्ति दुखां स्यूं होय॥

सुद्ध धरम जग मँह जगै, हुवै विसमता दूर।
छावै समता सुखमयी, मंगळ स्यूं भरपूर॥

जिण विध मेरा दुख कट्या, सैं का दुख कटज्याय।
सुद्ध धरम सब नै मिलै, सुखी सभी ह्वै ज्याय॥

जिण विध मेरा दिन फिर्या, सैं का दिन फिरज्याय।
संप्रदाय रै जाळ स्यूं, मुक्त सभी ह्वै ज्याय॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
फोन: ०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ४४०८६, ४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४६, कार्तिक पूर्णिमा**, १९ नवंबर, २००२

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१.** Regn. No. AR/NSK-46/2002

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ४४०७६
फैक्स : (०२५५३) ४४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
e-mail: dhamma@vsnl.com